International Journal of Literacy and Education

**E-ISSN:** 2789-1615
**P-ISSN:** 2789-1607
**Impact Factor:** 5.69
IJLE 2023; 3(1): 208-211
www.educationjournal.info
Received: 05-03-2023
Accepted: 13-04-2023

**सुबेदार सिंह यादव**
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**डॉ. पी. एन. मिश्रा**
प्रोफेसर, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**सुबेदार सिंह यादव**
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

# रीवा जिले में प्राथमिक स्तर पर शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

## सुबेदार सिंह यादव, डॉ. पी. एन. मिश्रा

**सारांश:**
प्राचीन काल में शिक्षकों का स्थान सर्वोपरि माना जाता था, शिक्षण करना शिक्षकों का व्यवसाय नहीं अपितु जीवन का एक प्रमुख एवं पवित्र लक्ष्य हुआ करता था, शिक्षा जिससे किसी भी राष्ट्र का निर्माण होता है, और विकास होता है, हमारा देश जो कभी विश्व गुरु था, सभी विद्याओं में अग्रणी हुआ करता था। प्राथमिक शिक्षा को समुचित शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान माना जाता है। प्राथमिक शिक्षा राष्ट्र की तकनीकी तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है, यह शिक्षा, नवयुवकों को शिक्षित करती है, जो किसी भी राष्ट्र के सामाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सकती है। ऐसी स्थिति में प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वत: ही स्पष्ट हो जाती है, शिक्षकों की भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके शिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर हुआ करती है। प्राथमिक शिक्षा की न्यू को और मजबूत बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा पाठ योजना तैयार कर उसके अनुसार अध्यापन कार्य कराया जाए, प्राचार्य व प्रधानाचार्य द्वारा स्वयं अध्यापन कार्य भी करने का प्रयास किया जाए।

**कूटशब्द :** रीवा जिला, प्राथमिक विद्यालय, शैक्षिक अभिवृत्ति

## प्रस्तावना
शिक्षा अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है, शिक्षा से ही व्यक्ति तथा समाज का समुचित विकास संभव है। शिक्षा व्यक्ति को जीवन जीने का आधार है, हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहद जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो सबके लिए शिक्षा की सुविधा उपलब्ध करवाना है, तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें, ईच वन टीच वन का नारा इस सिद्धांत में सफलता दिला सकता है। पढ़ाई परीक्षा अंकों की दौड़ में चाहे अनचाहे व्यक्तित्व विकास में बहुत सी समस्याएं अनसुलझी रह जाती हैं, जो कि भविष्य में निराशा हताशा और कुंठा के रूप में अपराधी प्रवृत्तियों को जन्म देती हैं। देश की शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य के बारे में एक कवि ने अपनी 4 पंक्तियों में वर्णन किया है, "चलो जलाएं दीप वहां जहां अभी भी अंधेरा है शिक्षा पाकर भिक्षा मांगे युवजन खाई ठोकर आज आजादी का सपना दिखाकर पाखंडी करते हैं राज" भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है, उसके कई पक्षों में सुधार की आवश्यकता है, हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहद जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है, शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक तत्वों में से एक है,

एक शिक्षित समाज ही देश को उन्नत और समृद्ध बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । शिक्षा विहीन समाज साक्षात पशु के समान बताया गया है, संस्कृत के महान कवि भर्तृहरि जी ने स्पष्ट रूप से कहा है, "शिक्षा विहीन नर: साक्षात पशु पुच्छ विशाणहीन" सबसे पहले शिक्षित समाज में नाम आता है देश को शिक्षित करने वाले आदरणीय शिक्षकगण का अब जब शिक्षकों की बात आई है तो हमें याद आता है आचार्य चाणक्य की जिन्होंने अपना शिक्षण धर्म बखूबी निभाया, देश के प्रति भी और समाज के प्रति भी ऐसे और ही देश में बहुत से अनुकरणीय उदाहरण हैं जो शिक्षकों के सम्मानीय स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । परंतु आज इस देश को जिसे दुनिया जगतगुरु की उपाधि से विभूषित कर चुकी है, शिक्षा के स्तर को स्तरीय स्थान दिलाने के लिए दो चार होना पड़ रहा है यह बड़े दुख का विषय है । आज हमारे इस विशाल देश के स्तर में लगातार गिरावट का सामना करना पड़ रहा है वर्तमान में शिक्षक या गुरु श्रद्धा का पात्र ना होकर वेतन भोगी नौकर बन गया है । अध्यापक की भूमिका गौण हो गई, तथा विद्यालय विश्वविद्यालय के प्रबंध तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है ।

शिक्षक समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी है, क्योंकि उसी पर समाज को सही दिशा में ले जाने की जिम्मेदारी होती है । अध्यापक अपने प्रभावी अध्यापन द्वारा प्रत्येक छात्र की समस्याओं का समाधान करता है, तथा उनकी शिक्षा में रुचि को बढ़ाता है, कोई भी अध्यापक ऐसा तभी कर सकता है, जब वह पठन-पाठन में रुचि एवं सही मनोभाव रखता हो । शिक्षक छात्र को विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की योग्यता का विकास करता है, उसे अभाव तथा प्रभाव दोनों स्थितियों में जीने की कला सिखाता है (रश्मि ज्योति एवं डॉ नागेंद्र नारायण मिश्र 2022) ।

## अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

मानव व्यवहार में मनुष्य की अभिवृत्ति विभिन्न पक्षों से प्रभावित होती हैं । अभिवृत्ति व्यक्ति के अनुभव के आधार पर विकसित होती हैं । अभिवृत्ति को प्रभावित करने में व्यक्तियों के अनुभवों का विशेष योगदान होता है । व्यक्तियों के अनुभव के आधार पर ही अभिवृत्ति का निर्माण होता है, जिसकी वजह से व्यक्तियों की अभिवृत्ति प्रभावित होती है । पिछले कुछ विगत वर्षों में हुए अध्ययनों के आधार पर ज्ञात हुआ है, कि परिवार, विद्यालय एवं महाविद्यालय परिवेश आदि का प्रभाव शिक्षकों के व्यवहारों पर भी पड़ता है । जिससे शिक्षकों की अभिवृत्ति भी प्रभावित होती है (अरमान अली 2020) ।

## शैक्षिक अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक विश्वास होता है, जो समाज के हर मनुष्य का अपने परिवेश और अन्य व्यक्तियों के प्रति होता है । उदाहरण स्वरूप शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति विशिष्ट अभिवृत्ति होती है । उसका विकास शिक्षा में किस तरह से होता है, और वह किस तरह से अपने व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं । शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यवहारों में किया गया परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं, शिक्षा को अभिव्यक्ति से संबंधित करते हैं, और शैक्षिक अभिवृत्ति में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का विकास होता है । एक योग्य शिक्षक तभी बनाया जा सकता है, जब उसकी शिक्षण कार्य के प्रति रुचि हो, शिक्षकों को विषयों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास पर भी कार्य करना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थियों का अलग अलग तरह का व्यवहार उनके शिक्षकों के व्यवहारों पर आधारित होता है । शिक्षकों को अपने विषय के क्षेत्र में ज्ञान के साथ-साथ एक कुशल मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी विद्यार्थियों की मनोदशा अस्थिर हो जाती है (अरमान अली 2020) ।

## साहित्य की समीक्षा

डॉक्टर रंजीता गोयल (2016), ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक – शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अलग - अलग पाई गई पुरुष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि लगभग समान पाई गई। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अलग-अलग पाई गई राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अलग-अलग पाई गई ।

श्रीमती मालती सक्सेना (2017), ने बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया, प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया जिसके आधार पर महिला व पुरुष बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा से व्यक्तिगत लाभ, शैक्षिक लाभ, सामाजिक लाभ और आर्थिक लाभ के प्रति अभिव्यक्ति का मापन किया गया और पाया गया कि शोध अध्ययन से बी. एड. प्रशिक्षणार्थी सेवा पूर्व एवं सेवारत सभी शिक्षक जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेंगे तथा जीवन कौशल शिक्षा से व्यक्तिगत लाभ, शैक्षिक लाभ, स्वास्थ्य

लाभ, सामाजिक लाभ एवं आर्थिक लाभ को प्राप्त कर विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा हेतु प्रेरित कर पाएंगे शिक्षक बालकों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर पाएंगे अभिभावक बालकों को सुरक्षित और अच्छा वातावरण प्रदान कर उन्हें विभिन्न जीवन कुशलताओं को विकसित करने में मदद कर सकेंगे।

डॉ. श्रद्धा सिंह एवं देवेंद्र कुमार यादव (2018), ने माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया, अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया एवं डॉ. जे. सी. गोयल द्वारा निर्मित शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक पाई गई। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिव्यक्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक पाया गया । माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक पाया गया।

राधारानी सिंह (2020, ने प्राथमिक विद्यालय में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया न्यादर्श के चुनाव हेतु गुच्छ न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया उपकरण के रूप में अध्यापकों एवं अभिभावकों की प्रतिक्रिया को जानने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली प्रपत्र का प्रयोग किया गया आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए टी अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया एवं अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों में सर्वशिक्षा अभियान के प्रति पुरुष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अंतर नहीं है, अर्थात पुरुष एवं महिला अध्यापकों की सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अभिवृत्ति में समानता पाई गई।

प्रोफ़ेसर डॉ मंजू शर्मा एवं अनिता यादव (2022), ने माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन किया शोधार्थी द्वारा डॉक्टर एसपी अहलूवालिया एवं ए. के. कालिया द्वारा निर्मित व्यापक आधुनिकीकरण सूची मापनी का प्रयोग किया गया और पाया कि माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि में भिन्नता पाई गई माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर आधुनिकीकरण का उपलब्धि पर कोई अंतर नहीं पाया गया माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया।

डॉ सुरेंद्र सिंह सिनसिनवार एवं प्रतिभा वर्मा (2023) ने माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव पर अध्ययन किया शोधार्थी द्वारा अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, शोध के लिए 100 छात्र एवं छात्राओं को शामिल किया गया और पाया कि माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान उनकी शैक्षिक उपलब्धि से अधिक पाया गया।

## विश्लेषण एवं व्याख्या

साहित्य की समीक्षा का अध्ययन करने के उपरांत पाया गया कि, रीवा जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की क्या स्थिति है, इसके विभिन्न उपयोगों तदोपरांत परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोध कार्य आगे बढ़ाया गया रीवा जिले के आंकड़ों को इकट्ठा करने तथा विश्लेषण करने के दौरान शोधकर्ता के समक्ष कई बातें आई, विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि, रीवा जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है। जबकि इन विद्यालयों में पहुंचने के दौरान स्थिति कुछ और ही सामने आती है, शोधकर्ता ने शोध के उपरांत यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी मूलभूत सुविधाओं का अभाव सरकारी नीतियों एवं उनके क्रियान्वयन में व्याप्त उदासीनता, शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कार्य को दिया जाना है । जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इस समस्या से बचने के लिए सरकार को प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

## निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हुआ है, कि प्राथमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में रीढ़ की हड्डी के समान अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है प्राथमिक शिक्षा से ही बालक का शिक्षा आरंभ होता है । प्रारंभिक अवस्था में बालक के अनुकरण की गति बहुत तीव्र होती है बाल्यावस्था में अर्जित किए गए ज्ञान व्यक्ति के संपूर्ण जीवन तक साथ रहता है । आधुनिक समय में छात्रों के समुचित तथा

सर्वांगीण विकास हेतु अभी और शोध की आवश्यकता है, जिससे छात्र का सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षिक विकास ठीक ढंग से हो सके।

## सुझाव

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों की कमी को दूर करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। अध्यापकों को अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है । सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। प्राथमिक स्तर पर अध्यापन कार्य प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा कराया जाए तो अधिगम प्रक्रिया ज्यादा प्रभावशाली हो सकती है।

## संदर्भ


1. प्रोफ़ेसर डॉ मंजू शर्मा एवं अनिता यादव (2022), माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, Page N0. 71-76.
2. डॉ सुरेंद्र सिंह सिनसिनवार एवं प्रतिभा वर्मा (2023), माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, International Journal of Literacy and Education 2023, Vol. No.3(1), Page No. 28-30.
3. डॉक्टर रंजीता गोयल (2016), प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन International Journal of Applied Research 2017, Vol.3(1), Page No.59-63.
4. राधारानी सिंह (2020, प्राथमिक विद्यालय में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, International Journal of creative Research Thoughts, December 2020 ,Volume 8, Issue 12, Page No.1672-1676.
5. रश्मि ज्योति एवं डॉ नागेंद्र नारायण मिश्र (2022), प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, International Journal of creative Research Thoughts, July 2022,Volume 10, Issue 7, Page No.309-314.
6. श्रीमती मालती सक्सेना (2017), बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, International Educational Journal CHETANA, July 2017, Vol.4/1, Page No.144-148.
7. डॉ. श्रद्धा सिंह एवं देवेंद्र कुमार यादव (2018), माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Scientific Research in Science and Technology, 2018, Volume 4, Issue 7, Page No. 866-876.
8. अरमान अली (2020), माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, Aug-Sept.-2020,Vol. 8/41, Page No. 10542-10555.